The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

नवाबराय से प्रेमचंद बनने तक कासफरनामा

बीरेन्द्र कुमार

(शोधार्थी),हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, **ईमेल** – 09virendrakumar@gmail.com

प्रो० पवन अग्रवाल

(शोध निर्देशक),हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ,

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17326492

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

यथावत, तेतर, भरसक, बालहठ, भ्रातृत्व-प्रेम, पर्यन्त, मुहरब्बती, प्रतिबंधित, पूर्वपीठिका,

ABSTRACT

आसान नहीं होता किसी लेखक के नामकरण को परिवर्तित कर देना, देश' काल' व परिस्थितियाँ ही इस कार्य को करने में सिद्धहस्त प्रतीत हुई है। जिसका त्याग कर दिया गया वह अंधियारे में जुगुनुओं सा टिमटिमाता रहे और जिसे अपना लिया गया वह प्रकाश पुंज बन जाये, चाहे बात नामकरण की हो, व्यक्ति के व्यक्तित्व की या फिर वस्तुओं के व्यापार की। इस तथ्य के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के आंशिक जीवनकाल का अध्ययन किया जा सकता है, जिसके एक पक्ष में उनका जन्म, नामकरण, बालहठ, भ्रातृत्व-प्रेम, बालपन है, तो दूसरे पक्ष में शारीरिक, मानसिक परेशानियों से जूझते हुए,(जिसमें परिवार की जटिल समस्याएँ भी शामिल है)साहित्य की चुनौती पूर्ण सेवा को जारी रखना है। बनारस के लमही गाँव में जन्मा एक साधारण सा बालक सिर्फ देखते ही देखते कथा साहित्य का सम्राट नहीं बन गया। अपितु दुख, दर्दों, परेशानियों से स्वयं को माँजता हुआ पात्रों में नये समाज के विकल्प की खोज में अपना जीवन साहित्य को यथावत प्रदान कर दिया।

मूल आलेख : -

प्रेमचंद बालपन से ही संघर्षशील व्यक्ति थे और वह जीवन पर्यन्त समाज में बदलाव के लिए संघर्ष करते रहे, बात चाहे किसी भी समाज, जाति, वर्ग या देश, काल, परिस्थितियों की क्यों ना हो। उनकी लेखनी समाज के

प्रत्येक हिस्से की तरफ उन्मुख हुई है। कोई भी पाठक, आलोचक,लेखन या विचारक जब इनके जीवन काल का अध्ययन करता है, तो वह पाता है कि- इनके नामकरण को लेकर जब भी चर्चायें होनी प्रारम्भ हुई है, तो यह बात निकलकर सामने आई है कि तीन बहनों के पश्चात् जन्म लेने के कारण ये 'तेतर' या पिता को पुत्र रत्न की प्राप्ति के निमित्त, आनन्दित मन से 'समृद्धि और सौभाग्य के स्वामी' के उपाधि की भविष्य में कामना करते हुए दिया गया नाम 'मुंशी धनपतराय' या भतीजे के प्रेम में विह्वल ताऊ द्वारा दिया गया नाम 'मुंशी नवाब राय' जैसे नामों के द्वारा वह अपनी साहित्यिक सेवा प्रारम्भ करते है।

शुरुआत के दिनों में अर्थात बालपन में लिखे नाटक से लेकर सोजे-वतन के ऊपर लगे पाबंदी तक की कालावधि में 'नवाब राय' जैसे नामकरण के सहारे वह उर्दू साहित्य में अपनी पहचान बना रहे थे। उनकी पत्नी ने भी साहित्य- सेवा के विषय में अपनी पुस्तक ('प्रेमचंद घर में')में इसका जिक्र किया है।वह लिखती है कि- " मेरे आने के पहले से ही आपकी साहित्य–सेवा जारी थी। आपका पहला उपन्यास 'कृष्णा" प्रयाग से प्रकाशित हो चुका था। मेरी शादी के साल ही आपका दूसरा उपन्यास 'प्रेमा" निकला, जिसका नाम आगे चलकर "विभव" हुआ। मेरी शादी के एक वर्ष बाद आपका कहानी-संग्रह "सोजेवतन" प्रकाशित हुआ। उस पर मुकदमा भी चला। हम लोग महोबा में थे। वहाँ भी खुफिया पुलिस पहुंची। उसके बाद उनको कलक्टर की आजा मिली कि आकर मुझसे मिलो। "

नवाब राय उर्दू के कथा साहित्य में स्वयं को बाँधने का भरसक प्रयत्न करते रहे, परन्तु यथासंभव सभी चीजे एक साथ एक समान गति से गतिमान नहीं हो सकती, कुछ मति, आंशिक नियति, तथा लेखनी की गति एवं प्रभाव लेखक के कर्मक्षेत्र को निर्धारित कर देता है। "शिवरानी देवी ने अपने एक संस्मरण में कहा है कि- वे और प्रेमचंद एक ही नाव के यात्री थे। जिन राजनीतिक साहित्यिक कामों में प्रेमचंद लीन थे, उनमें शिवरानी देवी का भी उनका साथ देना स्वाभाविक था। वे दोनों सामाजिक बदलाव के कर्ता भी रहे और उनकी विषय-वस्तु भी। जहाँ समाज उन्हें गढ़ रहा था, वे खुद समाज को गढ़ रहे थे। उनके जीवन में निजी और राजनीतिक एक हो गए थे।"

आगे के क्रम में प्रेमचंद के प्रारम्भिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में उनके महत्वपूर्ण कथनों पर विचार किया किया गया है- "प्रेमचंद ने अपना साहित्यिक जीवन एक उपन्यासकार और आलोचक की हैसियत से शुरू किया था। मुंशी श्यामनारायण निगम के अनुसार उन्होंने 1905 में उर्दू पत्र 'जमाना' के लिए एक आलोचनात्मक लेख भेजा था और उनकी राय जानने के लिए उन्हें एक उपन्यास का मसौदा भी भेजा था। प्रेमचंद ने अपनी पहली रचनाओं के बारे में लिखा है कि 1901 में उन्होंने उपन्यास लिखना शुरू किया था। उनका एक उपन्यास 1901 में प्रकाशित हुआ और दूसरा 1904 में। प्रेमचंद ने रवींद्रनाथ की कहानियों का अनुवाद भी किया था और खुद 1907 से

कहानियाँ लिखना शुरू किया। उनकी शुरू की कहानियाँ 'जमाना' में छपीं ।प्रेमचंद की पहली रचना, जो अप्रकाशित ही रही, शायद उनका वह नाटक था,जो उन्होंने अपने मामा जी के प्रेम और उस प्रेम के फलस्वरूप चमारों द्वारा उनकी पिटाई पर लिखा था। इसका जिक्र उन्होंने 'पहली रचना' नाम के अपने लेख में किया है।"

"प्रेमचंद और नवाबराय-इन नामों को लेकर सुदर्शन जी से उनकी बातचीत इस तरह हुई थी -

'आपने नवाबराय नाम क्यों छोड़ दिया?"

"नवाब वह होता है जिसके पास कोई मुल्क भी हो। हमारे पास मुल्क कहाँ?" "बे-मुल्क नवाब भी होते हैं।" "यह कहानी का नाम हो जाए तो बुरा नहीं, मगर अपने लिए यह नाम घमंडपूर्ण है। चार पैसे पास नहीं और नाम नवाबराय। इस नवाबी से प्रेम भला,जिसमें ठंडक भी है, संतोष भी है।"('हंस, पत्रिका मई 1937)

इंद्रनाथ मदान ने अपने विद्यार्थी जीवन की समाप्ति के बाद प्रेमचंद को सन् 1934 में दो बार कुछ प्रश्न भेजे थे, जिनका उन्होंने 7 सितंबर, 34 तथा 26 दिसंबर, 34 को उत्तर दिया था। प्रेमचंद का पहला उत्तर हिंदी में तथा दूसरा अंग्रेज़ी में उपलब्ध होता है। यहाँ हिन्दी में लिखे पत्र साक्षात्कार प्रस्तुत हैं :-

पत्र-1

मदान : - आप अपने बचपन की स्मृतियों को किस रूप में प्रस्तुत करेंगे ?

प्रेमचंद :-"अपने घर की मेरी बचपन की स्मृतियाँ बिलकुल साधारण हैं, न बहुत सुखी, न बहुत उदास। मैं आठ साल का था, तभी मेरी माँ नहीं रहीं। उसके पहले की मेरी स्मृतियाँ बहुत धुँधली हैं। कैसे मैं बैठा अपनी बीमार माँ को देखता रहता था, जो उतनी ही मुहरब्बती और मौक़ा पड़ने पर उतनी ही कठोर थी, जितनी कि सब अच्छी माएँ होती हैं।"

मदान : - आप अपने प्रारंभिक लेखन कार्य के बारे में बताएँ। आपने कब और कैसे लिखना शुरू किया और उर्दू से हिंदी में किस प्रकार आए ?

प्रेमचंद : -"मैंने उर्दू साप्ताहिकों में और फिर मासिकों में लिखना शुरू किया। लिखना मेरे लिए बस एक शौक़ की चीज़ थी। मुझे सपने में थी ख़याल न था कि मैं आख़िरकार एक दिन लेखक बनूँगा। मैं सरकारी मुलाजिम था और अपनी छुट्टी के वक़्त लिखा करता था। उपन्यासों के लिए मेरे अंदर एक न बुझने वाली भूख थी। जो कुछ मेरे हाथ लगता, मैं चट कर जाता। उसमें कोई भले-बुरे का चुनाव करने की तमीज़ मेरे अंदर न थी। मेरा पहला लेख सन् 1901 में और मेरी पहली किताब सन् 1903 में छपी। इस साहित्य-रचना से मुझे अपने अहंकार की तुष्टि के

अलावा और कुछ न मिलता था। पहले मैं समसामयिक घटनाओं पर लिखता रहा। 1914 में दूसरों ने मेरी कहानियों के अनुवाद किए और वे हिंदी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। फिर मैंने हिंदी सीख ली और 'सरस्वती' में लिखने लगा। उसके बाद मेरा 'सेवा-सदन' निकला और मैंने अपनी नौकरी छोड़ दी और स्वतंत्र साहित्यिक जीवन बिताने लगा।" इसके साथ ही साथ श्री. रा. टिकेकर के द्वारा लिये गये साक्षात्कार में वह कुबूल करते है कि – उन्होंने बचपन में देवकी नंदन खत्री के ग्रंथ पढे। इसके अतिरिक्त पं० रतननाथ धर की पुस्तकों का अध्ययन किया। टिकेकर के द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने स्वयं कहा था कि- "पं० रतननाथ धर को उर्दू उपन्यास का प्रणेता कहना चाहिए। 'फिसाना–ए–आजाद' नाम के 1200 पृष्ठ के महाग्रंथ की उन्होंने रचना की।"

'देवकी नंदन खत्री' 'पं० रतननाथ धर' की पुस्तकों का प्रभाव प्रेमचंद जी के मन मस्तिष्क प अधिक पड़ा। टिकेकर के द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में उन्होंने स्वीकार किया है कि इन दोनों लेखकों से उन्हें लिखने की प्रेरणा मिली। तथा उनसे आगे के क्रम में पूछे जाने पर कि उनको क्या किसी अन्य लेखक ने भी प्रभावित किया है ? उन्होंने कुछ इस प्रकार से जवाब दिया था-

"उन्होंने अब्दुल हलीम शरर आदि उपन्यासकारों के नाम बताए। वह उर्दू के ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। उन्होंने करीब-क़रीब छोटे-बड़े सब मिलाकर तीस उपन्यास लिखे होंगे। मुसलमान होने के कारण तथा प्रदेश में इस्लामी वातावरण होने कारण इस्लामी इतिहास की ही कथाएँ उनके उपन्यास में आई हैं। ऐसे तीन लेखकों से प्रेरणा ग्रहण करने के बाद मुंशी जी उपन्यासकार बनने लगे। यह सत्य है कि समाचार-पत्रों में लिखने का कार्य तो उन्होंने 1899 से आरंभ किया, लेकिन उनका प्रथम उपन्यास प्रकाशित होने में तीन वर्ष का समय लगा। उनका 'किशना' नाम का प्रथम उपन्यास 1902 में प्रकाशित हुआ और वह उर्दू-भाषा में था।"

"आगे वह बतलाते है कि– ''किशना' में ग्रामीणों का जीवन होने के साथ काबुली पठानों का कितना आतंक किसानों पर था, वह चित्रित किया गया है। उसके तीन साल के अंतराल के बाद 'प्रेमा' नामक उपन्यास हिंदी व उर्दू में प्रकाशित हुआ। यह लगभग 250 पृष्ठों का उपन्यास है। तीन विधवाओं की दयनीयता के चित्र के साथ पुनर्विवाह की वकालत होने के कारण प्रकाशक भी बड़ी कठिनाई में रहा। इस प्रकार की धार्मिक मान्यताओं के ख़िलाफ़ पुस्तकें बेचने के कारण प्रकाशक के विरुद्ध बहुत कड़ा आक्रोश पैदा हुआ। तब इस पाप के निवारणार्थ उसने अपने पास की 'प्रेमा' की सारी प्रतियाँ जला डालीं। इसी कारण लोगों में यह उपन्यास अधिक प्रसारित नहीं हुआ। 'प्रेमा' के उपरांत 'वरदान' जैसे राष्ट्रभक्ति-युक्त उपन्यास का जन्म हुआ। 'वरदान' उपन्यास आयु में 'प्रेमा' से पाँच वर्ष छोटा यानी इसका प्रकाशन 1912 में हुआ। उस समय के राजनैतिक वातावरण को ध्यान में रखा जाए, तो 'वरदान' में आए राष्ट्रभक्ति के विवेचन के औचित्य को समझा जा सकता है। इसके सिवा 'प्रेमा' का विषय

इतने तक ही सीमित न था। विवाह-संबंधी चर्चा हिंदुस्तान के प्रत्येक प्रांतीय समाज में अंग्रेजों के प्रभाव से प्रारंभ हुई। उसी तरह संयुक्त प्रांत में भी हुई और उसका प्रतिबिंब प्रेमचंद जी के उपन्यासों में देखने को मिला। 'वरदान' में वैवाहिक जीवन संबंधी चर्चा ही बहुत है।" प्रेमचंद के जीवन में कितनी ही विषम परिस्थितियां उत्पन्न हुई परन्तु उनकी साहित्य सेवा जारी रही, 'प्रेमचंद' ने अब 'नवाबराय' नाम छोड़कर प्रेमचंद नाम से लिखना शुरू किया। जो लोग उर्दू को विदेशी भाषा समझते हैं,उन्हें यह सुनकर दुःख होगा कि 'प्रेमचंद', यह प्यारा नाम, उन्हें एक उर्दू लेखक और संपादक दयानारायण निगम ने दिया था। पाँच-छह साल में नवाबराय के नाम से प्रेमचंद ने जो ख्याति पाई थी,वह समाप्त हो गई और उन्हें नए सिरे से, एक नया नाम लेकर साहित्य के मैदान में उतरना पड़ा।'

निष्कर्ष : -

कहानी संग्रह सोजेवतन को प्रतिबंधित किये जाने के कारण साहित्य जगत् को प्रेमचंद का एक नया रूप देखने को मिलता है, जो उनके नाम के साथ ही साथ उनके साहित्य को भी परिवर्तित कर जाता है। प्रेमचंद देशप्रेम को विश्व प्रेम(वसुधैव कुटुम्बकम्)और विश्व प्रेम को मानवीय प्रेम के रूप में परिवर्तित करने में माहिर है। प्रेमचंद उर्दू साहित्य में जहाँ 'नवाबराय' के नाम से धीरे-धीरे अपने पैर पसार रहे थे।वही 'धनपतराय, नाम सामाजिक संबंधों को जोडे हुए आगे बढ रहा था। प्रेमचंद:प्रतिनिधि संचयन(संपादक -कमल किशोर गोयनका)पुस्तक के अनुसार प्रेमचंद द्वारा प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ किये गये पत्राचार के स्रोतों में अधिकांशतः 'धनपतराय' नाम का उल्लेख है। जो सामाजिक संबंधों एवं मित्रों, स्वजनों के प्रति प्रेषित एक धरोहर के प्रतीक के रूप में मानी जा सकती है। वही उर्दू साहित्य के क्षेत्र में 'नवाबराय' के नाम से प्रारम्भिक उपन्यास व कहानियाँ निकलती रही जो आगे चलकर प्रेमचंद को प्रेमचंद बनने में अहम भूमिका निभाई, चाहे वह कृष्णा और किशना उपन्यास हो या सोजे-वतन में संकलित पाँच कहानियाँ,जिन्हें बाद में प्रतिबंधित कर दिया गया। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि- नवाबराय नाम प्रेमचंद के साहित्य लेखन की पूर्वपीठिका थी, जो आगे चलकर प्रेमचंद की ख्याति व नामकरण में समावेशित हो गई।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. देवी, शिवरानी. 2020. प्रथम संस्करण, नयी किताब प्रकाशन: दिल्ली, प्रेमचंद घर में, पृ०– **34.**
2. देवी, शिवरानी. 2025. भूमिका, प्रथम संस्करण, नयी किताब प्रकाशन: दिल्ली, पगली(कहानी संग्रह).पृ०– **8.**

3. शर्मा, रामविलास. 2022. बारहवाँ संस्करण, राजकमल प्रकाशन: नई दिल्ली, प्रेमचंद और उनका युग, पृ०-**20.**

4. शर्मा, रामविलास. 2022. बारहवाँ संस्करण, राजकमल प्रकाशन: नई दिल्ली, प्रेमचंद और उनका युग, पृ०–**23.**

5. गोयनका, कमल किशोर. 2013. प्रथम संस्करण, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन: नई दिल्ली, प्रेमचंद प्रतिनिधि संचयन, पृ०**680** –**.**

6. गोयनका, कमल किशोर. 2013. प्रथम संस्करण, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन: नई दिल्ली, प्रेमचंद: प्रतिनिधि संचयन, पृ०**680** —**81.**

7. गोयनका, कमल किशोर. 2013. प्रथम संस्करण, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन: नई दिल्ली, प्रेमचंद: प्रतिनिधि संचयन, पृ०**690** –**.**

8. गोयनका, कमल किशोर. 2013. प्रथम संस्करण, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन: नई दिल्ली, प्रेमचंद: प्रतिनिधि संचयन, पृ०**691** –**.**

9. गोयनका, कमल किशोर. 2013. प्रथम संस्करण, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन: नई दिल्ली, प्रेमचंद: प्रतिनिधि संचयन, पृ०**691** –**.**